Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Impact Factor (IIJIF): 5.454 | Vol. 8, Issue 1 | May. 2020 - October 2020 | pp. 51-54

'नौकर की कमीज' उपन्यास का सौन्दर्य

कान्ता सोनी

शोधार्थी, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

नौकर की कमीज भारतीय जीवन के यथार्थ और आम आदमी की कशमकश को प्रस्तुत करने वाला उपन्यास है। इस उपन्यास की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसके पात्र मायावी नहीं बल्कि दुनियावी है। हर पात्र की अपनी महत्ता है। यह उपन्यास कथा विन्यास के पारम्परिक स्थापत्य को तोड़ता है। यह उपन्यास घटनाओं पर कम उनके घटने के तरीकों पर ज्यादा जोर देता है। यह उपन्यास छोटे-छोटे वाक्यों के सहारे व्यंग्यात्मक शैली में एक माहौल भी तैयार करता चलता है। इस उपन्यास के बाहरी रूप में भाषा का जादू और कल्पना की दुनिया दिखती है। लेकिन इस आवरण के भीतर निम्न-मध्य वर्ग की जिंदगी की विद्रूपताएँ, सनक और सपने सभी कुछ उपस्थित हैं। शायद यही वजह है कि हर बार पढ़ने पर यह कृति नया अर्थ देती है। यही नौकर की कमीज का सौंदर्य है।

संकेताक्षर : *नौकर की कमीज, शिल्प, आत्मालापी रूपक, लोक-कथा, प्रयोग*

प्रस्तावना

साहित्य में कथ्य और शिल्प समान रूप से महत्त्वपूर्ण होते हैं। कथ्य और शिल्प दो अलग-अलग तत्व नहीं है, बल्कि इनकी पारस्परिक सम्बधता ही किसी भी रचना को मूल्यवान बनाती है। सहजता ही रचना का प्राण है और वह जितनी कथ्य में, उतनी ही शिल्प में भी प्रतिफलित हो तो कृति विशिष्ट बनती है। कोई भी रचनाकार पात्रानुकूल और परिवेश के अनुकूल भाषा और शिल्प का चयन करता है। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण उपन्यास सम्राट प्रेमचंद हैं जिनका रचनाकर्म भाषा-शिल्प की विशिष्टता के लिए भी प्रशंसनीय बना।

विनोद कुमार शुक्ल ने हिन्दी कथा साहित्य को नवीन ललित कलात्मक प्रयोग की और उन्मुख किया। 'नौकर की कमीज' विनोद कुमार शुक्ल का पहला उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1979 में हुआ। इसके पहले विनोद कुमार शुक्ल के कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके थे। 'नौकर की कमीज' अपने प्रकाशन के तुरंत बाद ही चर्चा में रहा। इस चर्चा का कारण इसके शिल्प की नवीनता है। यह उपन्यास कथा विन्यास के पारम्परिक स्थापत्य को तोड़ता है। यह उपन्यास घटनाओं पर कम उनके घटने के तरीकों पर ज्यादा जोर देता है। इस उपन्यास की शैली परंपरागत हिन्दी उपन्यास की शैली से भिन्न है। यहाँ भाषा का प्रवाह कविता के मुहावरों से मेल खाता है, ऐसे में इस उपन्यास को पढ़ते हुए कई बार किसी लंबी कविता को पढ़ने का एहसास होता है। परन्तु साथ ही यह उपन्यास हमारी साहित्य की सुरुचि को भी प्रभावित करता है। स्पष्ट है कि 'नौकर की कमीज' एक प्रयोगात्मक उपन्यास है, इसलिए प्रयोग की सीमाएं भी उपन्यास में नजर आती है। इसके अतिरिक्त यह स्वीकार करना होगा कि उपन्यास मूलत: 'प्रयोग के लिए प्रयोग' पर बल नहीं देता बल्कि बदले हुए युग की मांग पर एक सार्थक प्रयोग का प्रयत्न नजर आता है।[1]

'नौकर की कमीज' उपन्यास में भारतीय मध्यवर्गीय नौकरीपेशा जीवन की विसंगतियों और विडम्बनाओं को नया स्वर दिया है। उपन्यास के मुख्य पात्र 'संतू बाबू' के छोटे-छोटे जीवन प्रसंगों के आधार पर उपन्यास का एक नया ढांचा खड़ा करता है। हिन्दी उपन्यास के शिल्प में इस उपन्यास के माध्यम से भाषा को नया रूप दिया है। यह भाषा सहज और सरल होते हुए भी वक्र लगती है। विनोद कुमार शुक्ल के समकालीन कई ऐसे रचनाकार हुए जिनकी भाषा में एक खास तरह का आडम्बर भरा हुआ है। कई प्रकार के

साहित्यिक आंदोलनों और सामाजिक विमर्शों ने भाषा को जटिल बना दिया था और हमें इसकी आदत सी पड़ गई थी, जिससे भाषा की सहजता ही हमें असहज लगने लगी थी। इसका एहसास विनोद कुमार शुक्ल को भी हुआ। 'नौकर की कमीज' उपन्यास में बदले हुए समाज में इकट्ठा रद्दीपन की चर्चा है-

आदमी के विचार तेजी से बदल रहे थे। लेकिन उतनी ही तेजी से रद्दीपन इकट्ठा हो रहा था। रद्दीपन देर तक ताजा रहेगा। अच्छाई तुरंत सड़ जाती थी। अधिक से अधिक घंटे-दो-घंटे या एक-दो दिन तक ही रहती थी।[2]

विनोद कुमार शुक्ल साहित्य में भाषा और विचारों की अच्छाई को कुछ इस तरह बचा कर रख लेना चाहते हैं जैसे तेज हवा से दीये की लौ को बचाया जाए। इसी क्रम में विनोद कुमार शुक्ल हिन्दी उपन्यास के शिल्प में कुछ नया जोड़ देते हैं। उपन्यास की भाषा को नयी भंगिमा देते हैं। जैसा की उपन्यास के इस प्रकरण से स्पष्ट होता है-

घर बाहर जाने के लिए उतना नहीं होता जितना लौटने के लिए होता है। बाहर जाने के लिए दूसरों के घर होते हैं, दूसरे यानी परिचित या जिनसे काम हो। जिनके यहाँ उठना-बैठना होगा, या बाजार-बगीचा, दफ्तर-कारखाना होगा। लौटने के लिए खुद का जरूरी होता है, चाहे किराये का एक कमरा हो या एक कमरे में कई किरायेदार हो।[3]

इन सामान्य की पंक्तियों के माध्यम से लेखक का घर के प्रति जबरदस्त आकर्षण दिखाई देता है। विनोद कुमार शुक्ल अपनी रचनाओं में पर्यावरण संवेदना, पति-पत्नी सम्बन्ध, घर, पड़ोस और मित्र बार-बार आते हैं और पूरी संवेदना के साथ आते हैं। यही कारण है कि पाठक इनके पात्रों से सहज ही जुड़ जाता है।

'नौकर की कमीज' उपन्यास की एक विशेषता यह भी है कि इनमें छोटे-छोटे विचारों की भरमार हैं। ये विचार समाज के प्रति विनोद कुमार शुक्ल का नजरिया दिखाते हैं। विनोद कुमार शुक्ल के ही शब्दों में मैं कभी घोड़े पर नहीं बैठा था लेकिन विचारों से पुराना घुड़सवार था।[4]

विचारों की इस घुड़सवारी में भाषा को नई भंगिमा भी मिलती है। यहाँ गद्य व्याकरण के अनुशासन में कम और कविता के शासन में ज्यादा दिखता है। विनोद कुमार शुक्ल उपन्यासकार होने से पूर्व कवि भी रहे हैं।

गोपालराय के शब्दों में यह उपन्यास अपने कथ्य में यथार्थवादी और संरचना में कविता के शिल्प की ओर झुका हुआ है। यद्यपि इसमें दृश्यों की योजना यथार्थवादी उपन्यास के अनुसार ही की गयी है, पर आत्मालापी, सूत्रधार और नाट्य निर्देशक के रूप में उपस्थित मैं (नरेटर) कविता में मैं के अधिक निकट हैं।

सोने के पहले वाले विचार महत्वपूर्ण होते हैं या नहीं यह मुझे नहीं मालूम, इन विचारों में 'मैं' किसी दिन बहुत ताकतवर होता। कई जादूई या बहादुरी के करतब दिखाता। कभी पहाड़ से नीचे कूद जाता। उड़ते-उड़ते किसी बहुत खूबसूरत लड़की के कमरे में घुस जाता। कभी बहुत कमजोर और बीमार रहता। बहुत दिनों से मैं सोने के पहले वाले विचारों में कमजोर और बीमार आदमी ही हो रहा था। हो सकता है मौसम बदलने के कारण ऐसा हो। बदला पानी से मौसम बदल गया था।[5]

विनोद कुमार शुक्ल की इन पंक्तियों में मानो वह कविता कह रहे हों, जहाँ वह विचारों की बात करते हैं फिर पहाड़ और खुबसूरत लड़की की बात करते हैं और अचानक मौसम बदलना और बीमारी की बात करते नजर आते हैं। विनोद कुमार शुक्ल अपने विचारों को कथा में इस तरह पिरोते हैं कि पाठक उन विचारों को सहज समझ सके।

विनोद कुमार शुक्ल भाषा में विचारों को भली-भाँति गूँथ कर प्रकट करते हैं, परन्तु उनके विचार किसी पैबंद की तरह नहीं होते, बल्कि उनकी यह खासियत है कि अति क्रांतिकारिता और बड़बोलेपन से बचते हुए व्यवस्था में पीसती हुई मनुष्यता लेकिन अपराजेय मनुष्यता को तीव्र संवेदनशीलता से रेखांकित करते हैं।[6] 'नौकर की कमीज' उपन्यास की इन पंक्तियों के माध्यम से यह तथ्य स्पष्ट होता है-

छिटका धान बोनेवाला छोटा किसान होगा या लापरवाह बड़ा किसान। कुँए-मोटर पम्प इत्यादि बड़े किसान के पास हैं। नहर के किनारे की जमीन भी उनकी ही होगी। रोपा बोने का खतरा छोटा किसान नहीं उठाता। जिंदा रहने के लिए छिटका बोने का खतरा तो उठाना पड़ता है। अगर उनकी फसल खराब हो गई तो ये लोग बड़े किसानों के यहाँ मजदूर हो जाते हैं।[7]

विनोद कुमार शुक्ल की सृजन कला यहाँ प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास की याद ताजा करता नजर आता है। जहाँ होरी छोटा किसान ही होता है, परन्तु परिस्थितियाँ उसे मजदूर बना देती हैं। इस प्रकार नौकर की कमीज का संतू बाबू होरी का वंशज नजर आता है। इस उपन्यास में शोषण चक्र के दुहराव को महसूस किया जा सकता है।

होरी से लेकर संतू बाबू तक स्थिति कहाँ बदली है? स्थिति बदली है तो बस यही लगता है कि शोषण के हथियार बदल दिये गये हैं। इस प्रकार 'नौकर की कमीज' उपन्यास का कथानक भारतीय

समाज के व्यापक सच से ज्यादा करीब नजर आता है। इस प्रकार 'नौकर की कमीज' उपन्यास की भाषा में व्यंग्य और विनोद का पुट भी है-

मैं नौकर ढूँढने का ही काम तो नहीं करता? नौकरी का काम भी करता हूँ। अच्छा हुआ साहब ने नौकरानी के लिए साड़ी-ब्लाउज नहीं बनवाए।

एक अन्य उदाहरण, नौकरी और शादी को लेकर यह आमधारणा जिसे विनोद कुमार शुक्ल ने सुंदर विनोदपूर्ण भाषा शिल्प के माध्यम से दिखाया है-

मैंने उनसे शादी के लिए मना किया था तब उन्होंने कहा था कि तुम्हारी नौकरी लग गई है, शादी करना अब जरूरी हो गया है। शादी-शुदा आदमी नौकरी के प्रति ईमानदार होता है। बच्चे हो जाने के बाद वह ओर भी ईमानदार हो जाता है।[8]

विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों में व्यक्त पति-पत्नी प्रेम अद्वितीय है। 'नौकर की कमीज' उपन्यास में भी संतु और उसकी पत्नी का दांपत्य प्रेम की अनूठी मिसाल है। पत्नी-पति के बीच व्यंग्य-विनोद भी चलता दिखाया गया है। संतू बाबू जब अपनी पत्नी से मजाक करते हैं तब उनकी पत्नी कहती है- मुझमें बहुत हिम्मत थी अभी भी है, मुझे डर लगता है यदि हिम्मत दिखाई तो साथ छोड़े दोगे और मुझे दोष दोगे।

'नौकर की कमीज' उपन्यास का शिल्प अपने भाषा प्रयोग के कारण नया लगता है। भाषा प्रयोग के साथ ही इस उपन्यास में उपशीर्षकों का उपन्यासकार ने सार्थक प्रयोग किया है। हिन्दी उपन्यास में उपशीर्षकों का इतना सार्थक प्रयोग सम्भवत: नौकर की कमीज में ही पहली बार देखने को मिलता है।

पहला ही उपशीर्षक है- कितना सुख था कि इस बार घर लौटकर आने के लिए मैं बार-बार घर से बाहर निकलूँगा।

इस प्रकार दुनियादारी के दुखों में जो सुख है उसकी तलाश में उपन्यास शुरू होता है और खत्म इस आशय से होता है कि कितना सुख था।

यह उपन्यास का अंतिम उपशीर्षक है। गोपाल राय के शब्दों में विनोद कुमार शुक्ल अपनी कविताओं के भी इसी तरह शीर्षक रखते हैं। उनके एक कविता-संग्रह का शीर्षक है वह आदमी चला गया गरम कोट पहन कर विचार की तरह नौकर की कमीज में कदाचित कविता का ही प्रभाव पैदा करने के लिए यह चौंकाने वाली शीर्षक प्रणाली अपनायी गयी है।[10]

मैला आँचल और रागदरबारी उपन्यासों के बाद हिन्दी उपन्यास के शिल्प में कोई भारी बदलाव नहीं दिखता है। कुछ लोगों की दृष्टि में उपन्यास के शिल्प में तोड़फोड़ का मतलब यह है कि लेखक पथभ्रष्ट हो चुका है, शायद इसलिए लम्बे समय तक उपन्यास बँधे-बँधाए शिल्प में किसी लेखक ने छोड़छाड़ करने की कोशिश नहीं की। परन्तु विनोद कुमार शुक्ल सौभाग्य से न तो किसी विचारधारा से या खेमे से जुड़े थे और न ही किसी प्रभाव से प्रभावित थे, इसलिए उनका शिल्प अपनेआप में वरदान साबित होता है।

इसी क्रम में हम देखते हैं कि 'नौकर की कमीज' उपन्यास के शिल्प की एक ओर विशेषता यह है कि यहाँ कुछ लोककथाओं का नए अर्थो में इस्तेमाल हुआ है, साथ ही कथा के भीतर कई छोटी-छोटी उपकथाएँ भी हैं। उदाहरण के लिए माली और सोने के तोते की कथा-बगीचे पर कड़ा पहरा होने के बावजूद सोने का एक तोता बनकर बगीचों का सारा फल खा जाता है। सुबह फिर सोने का तोता बन जाता है।

मैंने कहा मुझे बचपन की एक कहानी याद आ रही है। एक राजा था उसका एक सुन्दर बगीचा था। उस बगीचे में सोने, चाँदी, हीरे, जवाहरात, मीठे खुशबूदार तरह-तरह के फल लगे थे। रोज सुबह मालूम होता था बगीचे के फल चोरी चले गए। राजा के बड़े लड़के ने पहरा दिया तब भी फल चोरी गए, राजा के मँझले लड़के ने पहरा दिया तब भी चोरी गये।

चोर एक मिट्टी का तोता था। माली ने बगीचे की गीली मिट्टी से उसे बनाया था। मिट्टी का तोता माली के लिए भी फल तोड़कर लाना चाहता था। एक राजा वह सचमुच का तोता हो गया। जल्दी-जल्दी फल तोड़कर उसने माली के सिरहाने इकट्ठा कर दिए। तोता फिर मिट्टी का हो गया। सुबह माली की नींद खुली तो वह घबरा गया और उसने सोचा राजा उसे चोर समझेगा। अब फल कहाँ छुपाए, इस डर से वह सारे फल खा गया। डर के मारे फल का स्वाद नहीं आया। अत: तोते की सलाह से माली फलों को स्वाद लेकर खाता है उसे पता चलता है कि उसके उगाये हुए फल कितने स्वादिष्ट हैं।[11]

दरअसल वह तोता उस माली के भीतर की दबी हुई इच्छा का प्रतीक है। वह मेहनतकश वर्ग की दबी इच्छाओं का प्रतीक है। इस तरह एक साधारण सी लोककथा में विनोद कुमार शुक्ल ने नया अर्थ भरा है। यह पुरानी कथा का पुनर्नवा होना है।

विनोद कुमार शुक्ल का उपन्यास 'नौकर की कमीज' का औपन्यासिक शिल्प बिना किसी नाटकीयता के विन्यस्त किया गया है और साथ ही बिना किसी अतिरिक्त भावुकता के साथ अपने आप में अद्वितीय उपन्यास हैं। इस उपन्यास में जीवन के यथार्थ और आदमी की कशमकश को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया

गया है। यह एक ऐसा बिंब है जिसके माध्यम से लेखक ने मनुष्य की बेबसी को हर स्तर पर दिखाने का प्रयत्न किया। इस उपन्यास का शीर्षक 'नौकर की कमीज' एक अद्‌भुत व्यंग्यात्मक मुहावरा है। इस उपन्यास के लिए इतना सपाट और निरलंकार नाम अपने आप को सिद्ध करता नजर आता है।

निष्कर्ष

विनोद कुमार शुक्ल ने हिन्दी कथा साहित्य को नवीन ललित कलात्मक प्रयोग की और उन्मुख किया और इसे व्यापक एवं सफल बनाया। यूरोपीय साहित्य में इस प्रकार के प्रयोग बहुत पहले से हो रहे हैं, परन्तु हिन्दी में यह नया है। हिन्दी उपन्यास में भाषा और शिल्प की चली आ रही जड़ता को विनोद कुमार शुक्ल 'नौकर की कमीज' उपन्यास के माध्यम से तोड़ते हैं। विनोद कुमार शुक्ल की निरीक्षण की शक्ति का कमाल है कि पूरे उपन्यास को पढ़ने के बाद जिंदगी के अनगिनत मार्मिक तथ्य दिमाग में तारीखवार दर्ज होते चले जाते हैं। उनके छोटे-छोटे वाक्यों में अनुभव और यथार्थ का पैनापन है। जिनकी मारक शक्ति केवल तिलमिलाहट ही पैदा नहीं करती, बल्कि अंदर तक भेदती चली जाती है। छोटे-छोटे वाक्यों के साथ व्यंग्यात्मक शैली में एक माहौल बनता चलता है। 'नौकर की कमीज' उपन्यास के चर्चा में आने की बड़ी वजह उसकी भाषा व शिल्प है।

विनोद कुमार शुक्ल मूलत: कवि हैं उपन्यास क्षेत्र में आने पर भी वह अपने कवि ह्रदय को सोने नहीं देते बल्कि उसे और सरल-सरस बनाते हैं। यह सरसता 'नौकर की कमीज' के भाषा-शिल्प में देखी जा सकती है। 'नौकर की कमीज' की भाषा और शिल्प से असहमत होने वाले आलोचक भी इस उपन्यास के महत्व को स्वीकार करने के लिए विवश हैं।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, महावीर (संपादक), सापेक्ष 51 विनोद कुमार शुक्ल दुर्लभ अभिव्यक्ति : विरल व्यक्तित्व, जुलाई-2009 जून 2010, पृ.सं. 199
2. शुक्ल, विनोद कुमार, नौकर की कमीज, राजकमल पेपरबेक्स, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1994, पृ.सं. 18
3. उपर्युक्त, पृ.सं. 7
4. उपर्युक्त, पृ.सं. 17
5. राय, गोपाल, उपन्यास की संरचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला छात्र संस्करण 2012, पृ.सं. 441
6. शुक्ल, विनोद कुमार, नौकर की कमीज, पूर्वोक्त, पृ.सं. 61
7. अग्रवाल, महावीर संपादक, सापेक्ष-51, विनोद कुमार शुक्ल दुर्लभ अभिव्यक्ति : विरल व्यक्तित्व, पूर्वोक्त, पृ.सं. 152
8. शुक्ल, विनोदकुमार, नौकर की कमीज, पूर्वोक्त, पृ.सं. 89
9. उपर्युक्त, पृ.सं. 131
10. अग्रवाल, महावीर, संपादक, सापेक्ष 51, विनोद कुमार शुक्ल दुर्लभ अभिव्यक्ति : विरल व्यक्तित्व, पूर्वोक्त, पृ.सं. 24
11. शुक्ल, विनोदकुमार, नौकर की कमीज, पूर्वोक्त, पृ.सं. 21
12. राय, गोपाल, उपन्यास की संरचना, पूर्वोक्त, पृ.सं. 440
13. शुक्ल, विनोदकुमार, नौकर की कमीज, पूर्वोक्त, पृ.सं. 215